एम.एच.डी.

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2017 और जनवरी 2018 सत्रों के लिए)

एम.एच.डी.-2 : आधुनिक हिन्दी काव्य
एम.एच.डी.-3 : उपन्यास एवं कहानी
एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ
एम.एच.डी.-6 : हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम (प्रथम वर्ष)
सत्रीय कार्य 2017-18

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें एम.एच.डी.-02, 03, 04 और 06 पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं। ये 8–8 क्रेडिट के पाठ्यक्रम हैं और आपको हर पाठ्यक्रम में एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य 100 अंकों का है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक लेखों के संग्रह भेजे गए हैं। पाठ्यक्रम 2, 3 तथा 4 में 'विविधा' नाम से मूल साहित्यिक कृतियों का संकलन किया गया है। पाठ्यक्रमों में शामिल नाटक और उपन्यासों को प्राप्त करने की व्यवस्था आपको स्वयं करनी होगी। आपसे अपेक्षा की जाती है कि सत्रीय कार्य करने से पहले इन सभी कृतियों को पढ़ लें।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा में पूछे जाने वाले सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपको अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक :.....
	नाम : .....
	पता : .....
पाठ्यक्रम शीर्षक :.....	.....
सत्रीय कार्य कोड :.....	.....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांकः .....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी लिखावट में उत्तर दें।
6 सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक (coordinator) के पास जमा कराएं। जुलाई, **2017 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **31 मार्च 2018** तक और **जनवरी, 2018 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **30 सितम्बर, 2018** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें:

1. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
2. व्याख्या से संबंधित काव्यांशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
3. आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
4. वाक्यों और अनुच्छेदों के बीच क्रमबद्धता हो।
5. आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
6. उत्तर साफ और सुंदर अक्षरों में लिखें तथा जिन बातों पर बल देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दें।
7. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी–2
आधुनिक हिंदी-काव्य

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने आधुनिक हिन्दी काव्य के कुल चौदह कवियों की कविताओं का अध्ययन किया है। इन कवियों की कविताएँ 'आधुनिक काव्य विविधा' में दी गई है। इन कवियों के काव्य से संबंधित आपको विभिन्न इकाइयाँ भी अध्ययन के लिए दी गई है। इनके अतिरिक्त आपको 'आधुनिक काव्य विवेचना' नामक पुस्तक भी अध्ययन के लिए दी गई है जिनमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों पर कई आलोचनात्मक लेख भी दिये गये है। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्नपत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ काव्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।
- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों और उनकी रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न कवि की विशेषता और उनके योगदान तथा उसके काव्य की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य कवियों और रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं।
- आपको विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।
- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन कमोबेश सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–2
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–2/टी.एम.ए/2017–18
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12x3=36

क) चर्चा हमारी भी कभी संसार में सर्वत्र थी,
वह सद्‌गुणों की कीर्ति मानो एक और कलत्र थी।
इस दुर्दशा का स्वप्न में भी क्या हमें कुछ ध्यान था?
क्या इस पतन ही को हमारा वह अतुल उत्थान था?
उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी,
जो हो रहा उन्नत अभी, अवनत रहा होगा कभी
हँसते प्रथम जो पद्‌म हैं, तम-पंक में फँसते वही।
मुरझे पड़े रहते कुमुद जो अंत में हँसते वही।।

ख) कालिदास, सच-सच बतलाना
इंदुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोये थे?
कालिदास, सच-सच बतलाना!

शिवाजी की तीसरी आँख से
निकली हुई महाज्वाला में
घृतमिश्रित सूची समिधा-सम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रन्दन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोये थे?
कालिदा, सच-सच बतलाना
रति रोई या तुम रोये थे?

ग) एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है।
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ –
'यह तीसरा आदमी कौन है'?
मेरे देश की संसद मौन है।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : 16×4=64

(क) साकेत के 'नवम सर्ग' की विशेषताएँ बताइए।
(ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के काव्य की विशेषताएँ बताइए।
(ग) 'अंधेरे में' कविता का विश्लेषण कीजिए।
(घ) धूमिल की कविताओं की काव्यागत विशेषताएँ बताइए।

एम.एच.डी.–3
उपन्यास एवं कहानी

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने उपन्यासों और कहानियों का अध्ययन किया है। पाठ्यक्रम में कुल पाँच उपन्यास और 14 कहानियाँ हैं जिन पर कुल 27 इकाइयों का आपने अध्ययन किया है। इनके अतिरिक्त 'हिन्दी कहानी विवेचना' नामक पुस्तक में आपको पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यासों और कहानियों पर अतिरिक्त सामग्री दी गयी है। आपको इस पाठ्यक्रम की संपूर्ण सामग्री का गंभीरता से अध्ययन करना होगा। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षापत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इस पाठ्यक्रम से संबंधित एक ही सत्रीय कार्य करना होगा। इस सत्रीय कार्य में आपको दो तरह के प्रश्न करने होंगे। निबंधात्मक प्रश्न और टिप्पणीपरक प्रश्न। प्रश्नों का उत्तर पाठ्यक्रम का अध्ययन कर, सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। प्रश्न को समझकर उत्तर लिखें। पाठ्य सामग्री से नकल न करें।

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–3
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–3/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15×4=60

1. 'गोदान' में अभिव्यक्त प्रेमचंद की लोकतांत्रिक दृष्टि पर प्रकाश डालिए।

2. दलित जीवन के संदर्भ में 'धरती धन न अपना' का मूल्यांकन कीजिए।

3. 'मैला आँचल' में आंचलिकता के विविध रंगों की अभिव्यक्ति हुई है– इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. 'सूखा बरगद' के आधार पर मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज की मानसिकता का विश्लेषण कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

   (क) पुरस्कार' में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना

   (ख) 'पाजेब' में अन्तर्निहित बाल मनोविज्ञान

   (ग) 'पिता' में सामाजिक यथार्थ

   (घ) 'तिरिछ' में लेखक का उद्देश्य

एम.एच.डी.–4
नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने नाटकों और अन्य गद्य विधाओं का अध्ययन किया है। चार नाटक और चौदह गद्य रचनाओं पर कुल 26 इकाइयाँ हैं। इनके अतिरिक्त आपको 'हिंदी गद्य विवेचना' के अंतर्गत कई आलोचनात्मक लेख भी दिए गए हैं। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्नपत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ गद्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न रचना की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, चरित्र-चित्रण, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं। नाटक से संबंधित सवालों में रंगमंच प्रस्तुति और अभिनेयता के बारे में भी सवाल होंगे।

- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।

- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-4
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–4/टीएमए/2017–18
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10x4=40

क) संस्कृति थी यह एक बूढ़े और अंधे की
जिसकी संतानो ने
महायुद्ध घोषित किए,
जिसके अंधेपन में मर्यादा
गलित अंग वेश्या-सी
प्रजाजनों को भी रोगी बनाती फिरी
उस अंधी संस्कृति,
उस रोगी मर्यादा की
रक्षा हम करते रहे
सत्रह दिन।

ख) लोहा बड़ा कठोर होता है। कभी-कभी वह लोहे को भी काट डालता है। उहूं भाई मैं तो मिट्टी हूँ – मिट्टी जिसमें से सब निकलते हैं। मेरी समझ में तो मेरे शरीर की धातु मिट्टी है, जो किसी के लोभ की सामग्री नहीं, और वास्तव में उसी के लिए सब धातु अस्त्र बनकर चलते हैं, लड़ते हैं, जलते हैं, टूटते हैं, फिर मिट्टी हो जाते है। इसलिए मुझे मिट्टी समझो– धूल समझो।

ग) मैं जानता था राजा के विराज होने पर न जाने कितने घोड़े और साईस ही बेमालिक नहीं हुए हैं, बल्कि भीमकाली के प्रताप से जीने वाले सारे रावी गाँव के ब्राह्मणों में भी कुहराम मचा हुआ है, सरकार ने देवी के अस्सी हजार खर्च को घटाकर पन्द्रह हजार से कम कर दिया है। ब्राहमण–देवता जरूर घर पर निराहार पुरश्चरण करते होंगे। उनके लिए इससे अच्छा तो फिरंगियों का राज्य था। अच्छा देवताओ, कोई पर्वा नहीं, तुम्हारे पास कपड़े में लिपटी वह सतयुग की पोथी है। सुनते हैं उसमें सोना नहीं पारस बनाने की विधि लिखी है।

घ) बंगाल का अकाल मानवता के इतिहास का बहुत बड़ा कलंक है। शायद क्लियापैट्रा भी धन के वैभव और साम्राज्य की लिप्सा में अपने गुलामों को इतना भीषण दुःख नहीं दे सकी जितना आज एक साम्राज्य और अपने ही देश के पूंजीवाद ने बंगाल के करोड़ों आदमी, औरतों और बच्चों को भूखा मार कर दिया है।

2 'आधे–अधूरे की' रचनागत विशिष्टताओं का मूल्यांकन कीजिए। 10

3. 'औरत' नुक्कड़ नाटक के कथावस्तु का विश्लेषण करते हुए इसके उद्देश्य का उल्लेख कीजिए। 10

4. रामचंद्र शुक्ल के भाव और मनोविकार संबंधी निबंध पर एक लेख लिखिए। 10

5. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की अंतर्वस्तु का मूल्यांकन कीजिए। 10

6 निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) 'तांबे के कीढ़े की भाषिक विशेषता
(ख) 'धोखा' निबंध की उद्देश्य
(ग) 'कलम का सिपाही' का शिल्पगढ़ वैशिष्ट्य
(घ) 'यात्रा वृत्तांत' और राहुल सांकृत्यायन

एम.एच.डी.-6
हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास

एम.ए. हिंदी का यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। ''हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास'' में आपने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों, हिंदी गद्य साहित्य और भाषा के विकास का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया है।

सत्रीय कार्य का एक और उद्देश्य है – सत्रांत परीक्षा के लिए आपको तैयार करना। सत्रांत परीक्षा में जो सवाल आपसे पूछे जाएँगे उनका ढाँचा सत्रीय कार्य में पूछ गए सवालों जैसा ही होगा। इसीलिए सत्रीय कार्य को आप गंभीरता से लें। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में पूछे गए सवाल दो प्रकार के होंगे।

कुछ प्रश्न निबंधात्मक या विवेचनात्मक होंगे जो पाठ्यक्रम में शामिल हिंदी काव्य प्रवृत्तियों, गद्य साहित्य तथा हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकास से संबंधित हो सकते हैं।

दूसरे प्रकार के प्रश्नों में आपको विभिन्न विषयों पर विवरणात्मक/आलोचनात्मक टिप्पणियाँ लिखनी होंगी। निबंधात्मक प्रश्नों के लिए लगभग 60 प्रतिशत तथा टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए 40 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रांत परीक्षा में निबंधात्मक प्रश्न 60 से 80 प्रतिशत के हो सकते हैं।

सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 8 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी-6
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–6/टीएमए/2017–2018
कुल अंक : 100

1. आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि की चर्चा कीजिए। 12

2. 'सूफ़ी' शब्द की विभिन्न व्युत्पत्तियों पर विचार करते हुए सूफ़ी मत एवं सिद्धांत को प्रभावित करने वाले भारतीय तत्वों का उल्लेख कीजिए। 12

3. रीतिकालीन कविता के विकास के विविध आधारों पर प्रकाश डालिए। 12

4. प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी पर निबंध लिखिए। 12

5. भारत की भाषाओं की सामान्य विशेषताएँ बताइए। 12

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $8 \times 5 = 40$
   क) हिन्दी कहानी में दलित चेतना
   ख) नई समीक्षा
   ग) प्रगतिशील साहित्य
   घ) अष्टछाप
   ङ) आदिकालीन जैन साहित्य